

बैडमिंटन के तो अच्छे दिन आ गए



यू तो देश में हर खेल तरक्की के रास्ते पर है पर पिछले कुछ वर्षों में भारतीय बैडमिंटन जिस रफतार से ऊपर जा रहा है उस पर फख होता है। स्टार शटलर पीवी सिंधु ने रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतकर भारतीय बैडमिंटन को इतनी ताकत दे दी है कि वह चीन जैसी महाशक्ति को मात दे रहा है। इसके पहले सायना नेहवाल ने विश्व चैंपियनशिप और आल इंग्लैण्ड चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर नया इतिहास रच दिया। के. श्रीकांत व पी. कश्यप ने कमाल का प्रदर्शन किया। सीनियर के अलावा जूनियर, सब जूनियर में भी भारतीय शटलर कमाल दिखा रहे हैं। भारतीय शटलरों की रैंकिंग में जबरदस्त उछाल आ रहा है। यह सब देखकर कम से कम यह तो कहा जा सकता है कि 'बैडमिंटन के तो अच्छे दिन आ गए।'

राम कुमार सिंह

वर्ष 2012 में लंदन ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर सायना नेहवाल ने भारतीय बैडमिंटन को नई पहचान दी थी। इस पहचान को रियो ओलंपिक में पीवी सिंधु ने और गहराई दी। यही नहीं, चीन के खिलाड़ियों के दबदबे वाले इस खेल में सिंधु ने रियो की स्वर्ण पदक विजेता

स्पेन की कैरेलिना मार्टिन के साथ मिलकर चीनियों का दबदबा भी खत्म किया है।

पिछले कई साल से भारत के प्रतिभावान बैडमिंटन खिलाड़ी विश्व स्तर पर छा जाने के लिए बेताबी से परफार्मेंस देने के लिए अपनी बारी का इंतजार ही कर रहे थे। ओलंपिक में भारत ने इस बार 1992 के बाद से पहली बार इस खेल में सबसे बड़ा सात सदस्यों वाला दल भेजा था। यहां 1992 का खास

जिक्र इसलिए कि पहली बार उसी साल बैडमिंटन को ओलंपिक प्रतिस्पर्धाओं में शामिल किया गया था। रियो ओलंपिक में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों ने कुछ बेहतर ही किया। जैसे कि लंदन ओलंपिक में साइना नेहवाल ने महिला एकल का कांस्य पदक जीता था। वहीं पुरुषों में पारुपल्ली कश्यप ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी भी

उत्तर प्रदेश में बैडमिंटन तेजी से बढ़ रहा है। यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर भी अत्याधुनिक हो रहे हैं। लखनऊ में बैडमिंटन अकादमी में विश्व स्तरीय सुविधाएं हैं। मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने राज्य के अर्जुन पुरस्कार विजेताओं को भी 20 हजार रुपए प्रतिमाह आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है।



बने थे। इसी तरह रियो में पीवी सिंधु ने अपने से ऊंची वरीयता वाली तीन खिलाड़ियों को हराते हुए रजत पदक हासिल किया। जबकि 23 साल के श्रीकांत किदाम्बी क्वार्टर फाइनल में इतिहास बनाने और बड़ा उलटफेर करने से महज तीन प्वाइंट से चूक गए। इस मैच में उनके सामने दुनिया के तीसरे नंबर के खिलाड़ी चीन के लिन डैन थे, जिन्हें मैच निकालने में एड़ी-चोटी से पसीना आ गया। हालांकि किदाम्बी क्वार्टर फाइनल से पहले के दौर में दुनिया के पांचवें नंबर के खिलाड़ी डेनमार्क के जैन ओ जॉर्गेनसन को हरा चुके थे। ओलम्पिक से पहले 2014 में पांच बार के विश्व चैम्पियन और दो बार के ओलम्पिक चैम्पियन लिन डैन को भी हरा चुके थे। डैन को हराकर उन्होंने चाइना ओपन सुपर सीरीज का खिताब जीता था। इस तरह सिंधु और किदाम्बी ने साबित कर दिया कि ये दोनों साइना के साथ मिलकर 2020 के टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय चुनौती बनेंगे।

इस खेल के ग्लैमर और पैसे ने इस खेल को अपना कैरियर बनाने में भी खिलाड़ियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इसी का परिणाम है कि आज भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों में एक से एक खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना-अपना परचम लहरा रहे हैं। इस सबका श्रेय बैडमिंटन एसोसिएशन आफ इंडिया (बीएआई) की मेहनत और विजन को जाता है जिसने विदेशी कोचों को अधिक से अधिक भारत में ट्रेनिंग की उपलब्धता सुनिश्चित की।

आने वाले दिनों में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी नई ऊंचाइयों को छुएंगे। इस देश में एक से एक धुरंधर बैडमिंटन खिलाड़ी हुए हैं पर इधर कुछ वर्षों में इस खेल ने रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है। सायना नेहवाल ने ओलंपिक, विश्व चैम्पियनशिप के अलावा कई ओपेन सीरीज के खिताब जीतकर भारतीय चुनौती को बुलंद किया है। इसको पीवी सिंधु ने ओलंपिक में रजत पदक जीतकर नई रफ्तार दी है। किसी भी खेल में इतना शानदार प्रदर्शन करना आसान काम नहीं है। यह सिंधु व सायना जैसी मजबूत इरादे वाली खिलाड़ियों के ही बस की बात है। खासकर जब मुकाबले में चीन, इंडोनेशिया जैसे देशों की खिलाड़ियों से मुकाबला हो। सायना, सिंधु, श्रीकांत, कश्यप ने अपने खेल से 'चीन की दीवार' को तोड़ दिया है।

उत्तर प्रदेश में भी बैडमिंटन तेजी से बढ़ रहा है। यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर भी अत्याधुनिक हो रहे हैं। लखनऊ में बैडमिंटन अकादमी



भारतीय बैडमिंटन की उपलब्धियां अभी और बढ़ेंगी। आने वाले समय में और भी बेहतर रिजल्ट देने की स्थिति में हमारे खिलाड़ी पहुंच जाएंगे क्योंकि बीआई प्रेसीडेंट डॉ. अखिलेश दास के मार्गदर्शन में हम लोग पिछले रिजल्ट को देखते हुए आगे की बेहतरी के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहे हैं, स्पेशल ट्रेनिंग प्रतिभावान खिलाड़ियों का चयन और पहले से अच्छा खेल रहे खिलाड़ियों को हर संभव तकनीकी एवं मॉरल सपोर्ट के द्वारा हमें खिलाड़ियों को विश्व पटल पर लक्ष्य हासिल करने के लिए तैयार करना है।



अरुण कवकण, पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी
चीफ चेरमैन सेलेक्शन कमेटी
आब्जर्वर बीआई फार बीबीडी एकादमी, लखनऊ

में विश्व स्तरीय सुविधाएं हैं। मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने राज्य के अर्जुन पुरस्कार विजेताओं को भी 20 हजार रुपए प्रतिमाह आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है।

भारतीय बैडमिंटन अपने सुनहरे भविष्य को देख रहा है क्योंकि उसके सीनियर ही नहीं जूनियर और उससे भी नीचे के स्तर पर खिलाड़ी स्तरीय खेल का प्रदर्शन कर रहे हैं। कोचों की भी संख्या में इजाफा हुआ है।

सबसे बड़ी बात यह कि अब एक्सपोजर खूब मिल रहा है। प्रायः पहले खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर के आठ से दस टूर्नामेंट ही खेलने को मिल पाते थे लेकिन जब से डॉ. अखिलेश दास बीआई के प्रेसीडेंट बने उन्होंने खेल का स्तर बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया। बंगलोर अकेडमी, हैदराबाद की गोपीचंद अकेडमी और लखनऊ की बीबीडी एकेडमी में विदेशी कोचों की उपलब्धता सुनिश्चित की और आज भारतीय खिलाड़ियों को एक वर्ष में इंटरनेशनल सर्किट के 20 से 25 टूर्नामेंट खेलने को मिलते हैं। रही-सही कसर पीबीएल के आयोजनों से पूरी हो गयी जिसमें चाइना और



प्रीमियर लीग ने की खासी मदद

भारतीय बैडमिंटन को प्रीमियर बैडमिंटन लीग ने नया रोमांच दिया। इसमें देश की प्रतिभाओं को ली चोंग वेई जैसे खिलाड़ियों के साथ रहने और खेलने का मौका मिला। इससे उनके प्रदर्शन, अनुभव और स्किल में जबरदस्त सुधार हुआ। इन आयोजनों में सिर्फ कोर्ट पर उतरने वाले खिलाड़ी नहीं बल्कि सपोर्टिंग स्टाफ में तमाम लोगों का जुड़ाव रहता है। यही नहीं इस लीग ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में बैडमिंटन का माहौल तैयार करने का उम्दा काम किया।

इंडोनेशिया और मलेशिया के धुरंधर खिलाड़ियों के साथ भारतीय खिलाड़ियों को दो-दो हाथ करने का मौका मिला जिससे भारतीय बैडमिंटन

अब समय आ गया है जब हमें खिलाड़ियों को ट्रेनिंग के लिए नये जमाने के कोचों की जरूरत है। अब वो जमाना नहीं रहा कि कोर्ट के बाहर से बैडमिंटन सिखाया जा सके। अब हमें कोर्ट के अंदर खिलाड़ियों के साथ खेलने वाले कोच की आवश्यकता है। जो पूर्व राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी ही भलीभांति कर सकते हैं। उनके अनुभव और स्किल दोनों युवा खिलाड़ियों के काम आ सकते हैं। वीआई प्रेसीडेंट ने कहा भी है कि वे हरसंभव मदद करेंगे। जिससे खिलाड़ियों में हर्ष का माहौल है और वे अपना बेस्ट देने को लालायित हैं।



रविन्दर सिंह, पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी

खिलाड़ियों ने नये अनुभव और उत्साह पैदा हुआ। और इस खेल के ग्लैमर और पैसे ने इस खेल को अपना कैरियर बनाने में भी खिलाड़ियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इसी का परिणाम है कि आज भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों में एक से एक खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना-अपना परचम लहरा रहे हैं। इस सबका श्रेय बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (बीएआई) की मेहनत और विज्ञान को जाता है जिसने विदेशी कोचों को अधिक से अधिक भारत में ट्रेनिंग की उपलब्धता सुनिश्चित की और आगे भी बीएआई उसमें सुधार करने के प्रति कटिबद्ध दिखाई पड़ रही है।

महाशक्ति बनने की तरफ कदम

विश्व बैडमिंटन में भारत महाशक्ति बनने की तरफ बढ़ रहा है। स्थितियां भी भारत और भारतीय खिलाड़ियों के पक्ष में दिख रही हैं। विश्व बैडमिंटन से चीन का दबदबा लगातार घट रहा है। ऐसे में, भारत के सामने इस खेल में महाशक्ति के तौर पर उभरने का सुनहरा मौका है।

हालांकि ये बात अलग है कि फिलहाल देश में क्रिकेट को ही धर्म की तरह पूजा जाता है। लेकिन इसके साथ यह भी देखना होगा कि दुनिया में क्रिकेट खेलने वाले देश महज दर्जन भर भी बमुश्किल ही होंगे। जबकि बैडमिंटन एक वैश्विक दर्जे वाला खेल है। इसलिए ये ज्यादा मायने नहीं रखता कि भारत ने क्रिकेट में कितनी बार विश्वकप जीता, बल्कि यह अधिक अहमियत रखता है कि बैडमिंटन जैसे खेल में देश कहां है और किस जगह पहुंच सकता है। ●

बाई दे रहा है बेहतर माहौल

डा. अखिलेश दास की अगुवाई में बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (बाई) खेल को आगे बढ़ाने के लिए नई-नई योजनाएं चला रहा है। कई योजनाएं पाइपलाइन में हैं। इनमें देश के कई हिस्सों में अत्याधुनिक ट्रेनिंग सेंटर या अकादमी खोलना भी शामिल है। इन सेंटरों में विश्व स्तरीय सुविधाएं होंगी। इनमें ट्रेनिंग देने के लिए स्तरीय प्रशिक्षकों का पूल तैयार कर रहा है। इन प्रशिक्षकों के लिए विशेष ट्रेनिंग प्रोग्राम चला रहा है।



इसमें विदेशी कोच ट्रेनिंग देते हैं। खिलाड़ियों के एक्सपोजर के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। यही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उम्दा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों व उनके कोचों को नगद पुरस्कार देकर उन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है। रियो में रजत जीतने वाली सिंधु को पचास लाख, क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे श्रीकांत और कोच गोपीचंद को दस-दस लाख रुपए दिए।

और भी हैं कतार में



इसे भारतीय बैडमिंटन का स्वर्ण काल न कहिए। यह तो सिर्फ शुरुआत है। आने वाले दिनों में भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी नई ऊंचाइयों को छुएंगे। इस देश में एक से एक धुरंधर बैडमिंटन खिलाड़ी हुए हैं पर इधर कुछ वर्षों में इस खेल ने रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी है। सायना नेहवाल ने ओलंपिक, विश्व चैंपियनशिप के अलावा कई ओपेन सीरीज के खिताब जीतकर भारतीय चुनौती को बुलंद किया है। इसको पीवी सिंधु ने ओलंपिक में रजत पदक जीतकर नई रफ्तार दी है। किसी भी खेल में इतना शानदार प्रदर्शन करना आसान काम नहीं है। यह सिंधु व सायना जैसी मजबूत इरादे वाली खिलाड़ियों के ही बस की बात है। स्वासकर जब मुकाबले में चीन, इंडोनेशिया जैसे देशों की खिलाड़ियों से मुकाबला हो।

अभिन्न श्याम गुप्ता
पूर्व अंतरराष्ट्रीय
अर्जुन पुरस्कार विजेता



सिंधु, सायना, श्रीकांत और कश्यप के अलावा भी देश में तमाम प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं जो आने वाले दिनों में अपना सौ फीसदी प्रदर्शन करने को उतावले हैं। मौजूदा समय पुरुषों में पांच खिलाड़ी ऐसे हैं जो विश्व रैंकिंग के पहले 50 स्थानों पर जमे हैं। इनमें श्रीकांत 11वें, अजय जयराम 22वें, एचएस प्रणय 28वें, साई प्रणीथ 36वें और समीर वर्मा 38वें स्थान पर हैं।

प्रणीथ ने तो ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप में दुनिया के नंबर एक मलेशियन खिलाड़ी ली चोंग वेई को हराकर सनसनी फैला दी थी। इसी तरह, प्रणय भी ज्यादा पीछे नहीं हैं। वे तो इस साल हुए दक्षिण एशियाई खेलों में किदाम्बी के लिए ही चुनौती बन गए थे, जब फाइनल मुकाबले का गेम उन्होंने 21-11 से जीत लिया था। हालांकि किदाम्बी ने वापसी करते हुए अगले दो सेट लगातार जीते और इन खेलों का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। वैसे प्रणय इससे पहले 2014 में इंडोनेशियन मास्टर्स ग्रांड प्रिक्स गोल्ड और 2016 में स्विस ओपेन ग्रांड प्रिक्स गोल्ड टूर्नामेंटों में खिताबी जीत हासिल कर चुके हैं। प्रणय ने लिन डैन और इंडोनेशिया के तोफीक हिदायत जैसे खिलाड़ियों को एक-एक बार शिकस्त दी है। अजय जयराम 2014 और 2015



हमारे खिलाड़ियों की वर्तमान समय की परफार्मेंस इसलिए बेहतर हो गयी है कि अब इन्हें इंटरनेशनल सर्किट के बहुत सारे टूर्नामेंट खेलने को मिलते हैं जो पहले संभव नहीं था। हमारे बैडमिंटन खिलाड़ी अब जितनी मेहनत करते हैं उतनी पहले भी करते थे पर तकनीकी अभाव के कारण रिजल्ट वर्तमान समय के जैसे नहीं थे, इसका मूल कारण जानकारी एवं इक्विपमेंट का अभाव था। पहले के ट्रेनिंग शिड्यूल भी उतने अच्छे नहीं थे लेकिन अब स्पेशिफिक शिड्यूल होते हैं जो केवल बैडमिंटन के लिए ही डिजाइन हैं। बेहतर तकनीक का इस्तेमाल हुआ है तो बेहतर रिजल्ट हमारे सामने है। बीएआई प्रेसीडेंट डॉ. अखिलेश दास का पूर्व खिलाड़ी होने का अनुभव और उनका मार्गदर्शन एवं गोपी जैसे खिलाड़ी की लगन ने अब के खिलाड़ियों को अच्छे तरीके से तराशने का काम किया है। जय सिंह, राष्ट्रीय चैंपियन (रहमतुल्ला कप)





में लगातार दो बार डच ओपन का खिताब जीत चुके हैं। उन्होंने 2015 में ही कोरिया ओपन सुपर सीरीज में भी फाइनल तक का सफर तय किया था। महिलाओं की विश्व वरीयता सूची में दो खिलाड़ी सायना नेहवाल सातवें और पीवी सिंधु नवें स्थान पर पहुंच गई हैं। सायना नेहवाल देश की पहली खिलाड़ी हैं जिसने रैंकिंग के सबसे उच्च पायदान पर पहुंच चुकी हैं। इनके अलावा सैली राणे, ऋत्विक्का शिवानी व तन्वी लाड भी रैंकिंग में शामिल हैं।

साथ में राघवेंद्र प्रताप सिंह ●

अब और बढ़ेंगी चुनौतियां : सिंधु

रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतकर इतिहास रचने वाली पीवी सिंधु फिलहाल अपनी इस कामयाबी का जश्न मना रही हैं। कुछ दिन विश्राम करने के बाद वह फिर कोर्ट पर सुबह-शाम पसीना बहाएंगी। उनके मुताबिक इस पदक के बाद अब उनके सामने चुनौतियां और बढ़ गई हैं। अपने खेल में और ज्यादा सुधार लाना है। पेश है दस्तक टाइम्स संवाददाता की उनसे एक संक्षिप्त बातचीत....

रियो में रजत पदक जीतने पर कैसी फीलिंग है?

इस फीलिंग को शब्दों में बयां नहीं कर सकती। पर जब पोडियम पर खड़ी थी तो आंखों में आंसू आ गए। उस दिन पूरी रात सो नहीं सकी। पर अपनी इस उपलब्धि में ही खोई रही। ओलंपिक का पदक जीतना मेरा सपना था।

जब आप रियो पहुंची थी तो क्या अंदाजा था?

सच, बताऊं... मैंने पदक के लिए सोचा भी नहीं था। बस सेमीफाइनल तक पहुंचने की सोच रही थी। पर यह बात सही है कि मैंने सोच लिया था कि मुझे हर मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। स्वर्ण पदक से चूक गई लेकिन मैं खुश हूँ। कैरोलिना ने शानदार खेल दिखाया। वह जीत की हकदार थी।

ऐसा क्यों है कि आपकी तुलना लोग सायना से करने लगते हैं?

यह गलत है। सायना दीदी बहुत बड़ी खिलाड़ी हैं। वह दुनिया की नम्बर एक खिलाड़ी रही हैं। ऐसे में उनसे मेरी तुलना नहीं करना चाहिए। मैंने तो उनके



खेल को देखकर काफी कुछ सीखा है। वह मेरी आदर्श हैं। पर मैं चाहती हूँ कि मेरा खेल और बेहतरीन हो और मैं ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतूँ।

अब आगे की क्या योजना है?

रियो के बाद थोड़ा विश्राम करना चाहती हूँ। बहुत तपस्या की है। अब अपने मम्मी-पापा के साथ थोड़ा समय बिताना चाहती हूँ। इसके बाद तो फिर कोर्ट पर पसीना बहाना है। ट्रेनिंग में हर दिन कर रही हूँ। अब चुनौतियां ज्यादा बढ़ गई हैं। लोगों की उम्मीदें ज्यादा हो गई हैं। ऐसे में अब अपने खेल को और ज्यादा निखारना है।

भारतीय बैडमिंटन आज जिस मुकाम पर है, उसकी वजह खिलाड़ियों को सही समय पर सही जानकारी, वरिष्ठ खिलाड़ियों के अनुभव, कोच, फिजियोथेरेपिस्ट और उनके साइकोलॉजिस्ट हैं, आज की टीम इन सबको मिलाकर बनती है। एक खिलाड़ी का जीवन बहुत ही त्यागपूर्ण होता है। ऐसे में कोई भी खिलाड़ी अपनी दिनचर्या को यूँ ही नहीं ले सकता है। नियमित अभ्यास कैसे किया जा रहा है। वह चोट से अपने आपको कैसे बचाता है। चोट लगने की कई वजहें हो सकती हैं। इसके अलावा खिलाड़ी को कितना और कैसा फूड सप्लीमेंट चाहिए इसका विशेष ध्यान रखना होता है। इसी तरह उसे पानी कितना पीना है, कितनी स्ट्रेचिंग करनी है, वार्मअप कैसे करना है, इन सभी बातों का खिलाड़ी यदि ध्यान रखता है तो वह मैच के दौरान या फिर अभ्यास के दौरान चोट से बच सकता है। मौजूदा समय में भारतीय खिलाड़ियों और आफिसियल्स ने इन सभी बातों को भलीभांति समझा है। जिसका रिजल्ट आपके सामने है।



डा. योगेश शेठी
फिजियोथेरेपिस्ट बीबीडी
एकेडमी, लखनऊ

बैडमिंटन की बढ़ती चुनौतियां

भारतीय बैडमिंटन नित नई तरक्की की राह पर है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शटलरों ने कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। इसमें ओलंपिक खेल, विश्व चैंपियनशिप, राष्ट्रमण्डल खेल, आल इंग्लैण्ड चैंपियनशिप समेत सभी बड़े टूर्नामेंटों में भारतीय शटलरों ने न सिर्फ अपनी धाक जमाई बल्कि कई पदक जीते। भविष्य में भारतीय बैडमिंटन की तस्वीर और ज्यादा चमकदार हो, चीन व इण्डोनेशिया से भी ज्यादा भारत का इस खेल में दबदबा हो। इसके लिए भारतीय बैडमिंटन एसोसिएशन (बाई) ने लांग टर्म प्रोजेक्ट तैयार किया है। कई प्रोजेक्ट पर काम भी शुरू कर दिया गया है। इस पूरे प्रोजेक्ट के पीछे बाई के अध्यक्ष डा. अखिलेश दास की सोच और मेहनत है। बैडमिंटन के पूर्व शानदार राष्ट्रीय खिलाड़ी और पूर्व केंद्रीय इस्पात मंत्री रहे डॉ. अखिलेश दास से संपादक रामकुमार सिंह ने भारतीय बैडमिंटन की मौजूदा हालत और भविष्य के बारे में लम्बी बातचीत की। पेश है बातचीत के प्रमुख अंश



सबसे पहले रियो ओलंपिक में भारतीय शटलरों के उम्दा प्रदर्शन और सिंधु के रजत पदक जीतने की बधाई। यह पदक भारतीय बैडमिंटन के लिए कितना उपयोगी है?

बहुत उपयोगी साबित होगा। बैडमिंटन के माहौल में और इजाफा होगा। सिंधु के पदक ने भारतीय बैडमिंटन की चुनौतियों को बहुत बड़ा कर दिया है। इस पदक ने निःसंदेह खुशियां दी हैं लेकिन हमें इसके हेंगओवर से जल्द उबरकर आने वाले दिनों में चुनौतियों का सामना करने की रणनीति तय करनी होगी क्योंकि भारतीय खिलाड़ियों के बढ़ते कदम देखकर अन्य देश चुप नहीं बैठेंगे। इसलिए अपने प्रदर्शन में निरंतरता बनाए रखना हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

भारतीय बैडमिंटन की उपलब्धियों को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि हम बैडमिंटन की विश्व शक्ति बनते जा रहे हैं?

यह सही है कि अब हम बैडमिंटन में विश्व पावर बनते जा रहे हैं। साइना ने आल इंग्लैण्ड बैडमिंटन के फाइनल में पहुंचकर इतिहास रचा। यही नहीं विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनीं। वह कई ओपेन सीरीज के फाइनल में पहुंची और कई खिताब भी जीते। के. श्रीकांत व पी. कश्यप ने भी इस खेल को ऊंचायां दीं। इसके अलावा पीवी सिंधु ने तो कमाल कर दिया। वह विश्व चैंपियनशिप में लगातार दो बार पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। ओलंपिक में उन्होंने नया इतिहास लिख दिया। रजत पदक जीतकर भारतीय बैडमिंटन को चोटी पर पहुंचा दिया।

तो...चीन व इण्डोनेशिया का वर्चस्व टूट रहा है?

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय बैडमिंटन ने जो उपलब्धियां दर्ज की हैं उसे देखते यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमने चीन, थाईलैण्ड व इण्डोनेशिया का दबदबा खत्म किया है। भारतीय खिलाड़ी हर टूर्नामेंट में चीन, इण्डोनेशिया व थाईलैण्ड के आला खिलाड़ियों को मात दे रहे हैं। ओलंपिक में सिंधु का कई वरीय खिलाड़ियों को हराकर फाइनल में पहुंचना और श्रीकांत का विश्व के चोटी के शटलर लिन दान के साथ कड़ा मुकाबला करना इसके उदाहरण हैं। आने-वाले दो-तीन वर्षों में भारत को बैडमिंटन की विश्व पावर बनने से कोई रोक नहीं सकता।

रियो ओलंपिक में सफलता के बाद बैडमिंटन के प्रति लोगों का रुझान एकाएक बढ़ गया है, इसे अपने पक्ष में कैसे भुनाएं?

यह सही बात है। देश के बच्चों व उनके अभिभावकों में बैडमिंटन के प्रति रुझान बढ़ा है। बैडमिंटन सेंट्रों में बैडमिंटन खेलने वालों की संख्या बढ़ रही है। अभिभावक भी रुचि लेने लगे हैं। उन्हें लग रहा है कि उनके बच्चे खेल में कुछ कर सकते हैं। लोगों की समझ में आ गया है कि इस खेल में भी करियर बनाया जा सकता है। नई पीढ़ी में बहुत सी सिंधु हैं और के.श्रीकांत

व कश्यप हैं। बस अच्छे कोच और डिवोशन के साथ इनकी पहचान कर इन्हें सही ट्रेनिंग देने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री ने भी हाल में खेलों के लिए टास्क फोर्स बनाने की बात कही है, इसे किस रूप में देखते हैं और इससे क्या फायदा होगा?

मेरे ख्याल से इससे भारतीय बैडमिंटन में बहुत जल्द और बहुत बड़ा बदलाव आएगा। खेलों के लिए टास्क फोर्स बनाने की प्रधानमंत्री ने जो घोषणा की है वह स्वागत योग्य है। इससे अच्छे और सुखद परिणाम आएंगे। यह पहला अवसर है कि जब देश के प्रधानमंत्री ने खेलों के बारे में गंभीरता से सोचा है। यह एक बड़ी सोच है। इसके बाद 2020 के ओलंपिक के लिए माहौल तैयार होगा। जाहिर है कि तैयारी के लिए बजट बढ़ेगा, कोचों के वेतन के अलावा उनकी उनकी सुविधाएं बढ़ेंगी। कोच भी पहले से ज्यादा पेशेवर नजरिए से काम करेंगे। वे ज्यादा शिद्दत और मन लगाकर ट्रेनिंग दे पाएंगे।

ट्रेनिंग को लेकर बाई की क्या योजना है?

देश में अच्छे प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए बैडमिंटन एसोसिएशन आफ इण्डिया (बीएआई) ने लांगटर्म योजना तैयार की है। इसके तहत बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन (बीडब्ल्यूएफ) के साथ ...कोच दा कोचेज...कार्यक्रम चलाया जाएगा। अभी तक प्रशिक्षकों को ट्रेनिंग देने की संस्कृति नहीं थी। पर अब प्रशिक्षकों को विश्व स्तरीय बनाने के लिए बीडब्ल्यूएफ व साई के साथ मिलकर एक स्पेशल ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किया गया है। यह कार्यक्रम पूरे देश में चल रहा है। इसमें प्रशिक्षकों को ट्रेनिंग देकर बेहतर प्रशिक्षक तैयार किए जाएंगे। ऐसे लोगों को भी तैयार किया जाएगा जो पार्टटाइम या होल टाइम बनकर ट्रेनिंग देना चाहते हैं। लखनऊ, जालंधर, चण्डीगढ़, अहमदाबाद और मणिपुर में प्रशिक्षकों का ट्रेनिंग कैम्प लग भी चुका है। अब दक्षिण भारत में लगाने की तैयारी है।

क्या आपको नहीं लगता कि बैडमिंटन के मौजूदा इन्फ्रास्ट्रक्चर को और ज्यादा मजबूत करने की आवश्यकता है?

खिलाड़ी हैं और अच्छे प्रशिक्षक भी तैयार किए जा रहे हैं पर बैडमिंटन का इन्फ्रास्ट्रक्चर कम है। बिना सरकार की मदद से इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना बेहद मुश्किल काम है। ऐसे में सरकार की मदद से इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि जैसे लखनऊ में बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी है या बेंगलुरु व हैदराबाद में गोपीचंद अकादमी... ऐसी ही अकादमी देश में और जगहों पर भी होनी चाहिए। इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। दिल्ली में वहां की सरकार और बीएआई मिलकर ऐसी ही अकादमी इंदिरा गांधी स्टेडियम में शुरू करने जा रहे हैं। ऐसी ही एक अकादमी मुम्बई में खोलने की योजना है। यह काम नेशनल स्पोर्ट्स क्लब आफ इण्डिया (एनएससीआई) व साई के साथ मिलकर किया जा रहा है।



खेलों के लिए टास्क फोर्स बनाने की प्रधानमंत्री ने जो घोषणा की है वह स्वागत योग्य है। इससे अच्छे और सुखद परिणाम आएंगे। यह पहला अवसर है कि जब देश के प्रधानमंत्री ने खेलों के बारे में गंभीरता से सोचा है।



इन अकादमियों का स्वरूप क्या होगा?

इन अकादमियों में अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ अंतरराष्ट्रीय कोच ट्रेनिंग देंगे। डेनमार्क, स्वीडन, इण्डोनेशिया व मलेशिया के कोचों को ट्रेनिंग के लिए बुलाया जाएगा। बाबू बनारसी दास अकादमी में विदेशी कोच ट्रेनिंग दे रहे हैं। इसके अलावा बेंगलुरु व हैदराबाद में गोपीचंद अकादमी में भी विदेशी कोच हैं।

हर खेल में खिलाड़ी अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं। उनका भविष्य सुरक्षित हो इसके लिए क्या किया जा सकता है?

खिलाड़ियों का भविष्य सुरक्षित करना होगा। मान लीजिए कोई खिलाड़ी खेल रहा है। 25-26 वर्ष की आयु में यदि उस खिलाड़ी को कहीं चोट लग जाती है, जिससे उसका भविष्य में खेलना मुश्किल है तो ऐसा खिलाड़ी तो कहीं का नहीं रहा। ऐसे खिलाड़ियों का भविष्य सुरक्षित करना होगा। साथ ही जिस खिलाड़ी ने खेलना शुरू किया, उसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुछ कर दिखाया तो उसका भविष्य सुरक्षित माना जाता है। अच्छी नौकरी और तमाम तरह के लाभ उसे मिलते हैं। पर अगर वह बड़े स्तर तक नहीं पहुंच पाया तो उसका भविष्य भी अच्छा हो, यह भी सुनिश्चित करना होगा।

नई प्रतिभाओं को तराशने के लिए बाई ने क्या कोई योजना बनाई है?

क्यों नहीं है। इन प्रतिभाओं को ही तो ध्यान में रखकर हर योजना तैयार की जा रही है। देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। अब उन्हें ट्रेप करने की जरूरत है। खासकर जमीनी स्तर यानी 12-13 साल के बच्चों को खोजने की जरूरत है। मेरा तो मानना है कि इससे भी कम उम्र के बच्चों को खोजकर उन्हें ट्रेनिंग देने की जरूरत है। नार्थ-ईस्ट खासकर मणिपुर की तरफ खास ध्यान देने की जरूरत है। मणिपुर में एक बड़ा सेंटर खोलने की तैयारी की जा रही है। यही नहीं, अरुणाचल प्रदेश भी एक सेंटर खोलने का उत्सुक है।

अक्सर खिलाड़ी और कोच के बीच में विवाद की खबरें आती हैं, जिसका असर खिलाड़ी की परफार्मेंस पर भी पड़ता है? इसे कैसे दूर किया जा सकता है?

बीच-बीच में कुछ खबरें ऐसी आती हैं जो खिलाड़ी और कोच के अहम के टकराव की होती हैं। यह गलत है। सिर्फ कोच ही नहीं कई बार खिलाड़ी और पदाधिकारियों का भी अहम टकराता है। कोच व संघों के पदाधिकारियों

को हमेशा बैकग्राउण्ड में रहना चाहिए। संघों के पदाधिकारियों का खिलाड़ी होना बहुत जरूरी है। जब वह खिलाड़ी होगा तभी वह खिलाड़ियों की बात और उनके मर्म को समझेगा। हमेशा कोचों व पदाधिकारियों को चाहिए कि वे खिलाड़ियों को अहमियत दें। जब कोई खिलाड़ी स्टार बनता है तो उसकी अपेक्षाएं भी बढ़ती हैं। लोग उसके ऑटोग्राफ लेते हैं न कि पदाधिकारियों के। कोच व पदाधिकारी को पर्दे के पीछे रहकर प्रोड्यूसर बनना चाहिए, वे एक्टर न बनें। खिलाड़ियों को बोलने देना चाहिए, उनकी सुननी चाहिए। उनसे स्पर्धा नहीं करनी चाहिए। वे हमसे नहीं कहेंगे तो किससे कहेंगे। खिलाड़ियों को हमेशा आगे बढ़ाना चाहिए।

आप उत्तर प्रदेश बैडमिंटन संघ के भी अध्यक्ष हैं। ऐसे में उत्तर प्रदेश बैडमिंटन की बेहतरी के लिए क्या सोचते हैं?

मैं पूरे देश के बैडमिंटन के बारे में सोचता हूं। उत्तर प्रदेश इससे अलग नहीं है। हां यह सही है कि उत्तर प्रदेश से कुछ लगाव ज्यादा है। यहां बैडमिंटन के लिए बहुत काम हो रहा है। बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी अंतरराष्ट्रीय स्तर की है। इसमें अब बहुत सुधार किया जा रहा है। इसे तैयार करने में हम लोगों ने जी-जान लगा दी। यह हमारे लिए मंदिर और मस्जिद से बढ़ कर है। इसके प्रति अपनी आस्था और पवित्रता बनाये रखनी है। कुछ आमूलचूल परिवर्तन भी किये जा रहे हैं, बहुत बड़े पैमाने पर बदलाव किये गये हैं जिसकी जानकारी आपको मिल जाएगी। खिलाड़ियों के साथ भेदभाव नहीं होगा और खिलाड़ियों को ही खेल और ट्रेनिंग दोनों में वरीयता दी जाएगी।

एक समय था जब उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी बैडमिंटन में छाए थे। अब ऐसा नहीं है, क्यों?

यह सही है। एक समय टीएन सेट, सुरेश गोयल, मीना शाह, दमयंती ताम्बे, सैयद मोदी जैसे खिलाड़ियों की भारतीय बैडमिंटन में तूती बोलती थी। बाद में अभिन्न श्याम भी बढ़िया खेले। इधर कुछ गैप हुआ है। इसे जल्द दूर किया जाएगा। उत्तर प्रदेश बैडमिंटन संघ और बाबू बनारसी दास उत्तर प्रदेश बैडमिंटन अकादमी में काफी बदलाव किए जा रहे हैं। इन्हें मजबूत किया जा रहा है। लक्ष्य बनाकर काम किया जाएगा। हर काम में पारदर्शिता बरती जाएगी। खिलाड़ियों के साथ अपनाये जाने वाले पक्षपात व भेदभाव दूर किया जाएगा। हमारे लिए अकादमी मंदिर व मस्जिद से बढ़कर है। इसमें सिर्फ खेल और खेल ही होगा। ●

प्रकाश पादुकोने :

देश के पहले आल इंग्लैण्ड चैंपियन (1980) बने। 1981 में वर्ल्ड चैंपियन व राष्ट्रमंडल चैंपियन बने। वह पहले भारतीय खिलाड़ी थे जो विश्व के नम्बर एक खिलाड़ी बने।

दिनेश खन्ना

अपने जमाने के धुरंधर खिलाड़ी रहे। 1965 में एशियाई चैंपियन बने। राष्ट्रमंडल खेल में कांस्य पदक जीता।

सुरेश गोयल :

सिंगल में 1962 से लेकर 1970 तक लगातार पांच बार राष्ट्रीय चैंपियन रहे। डबल्स के भी वह पांच बार चैंपियन बने। कई अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

सैयद मोदी :

1980 से 87 तक लगातार आठ बार राष्ट्रीय चैंपियन रहे। राष्ट्रमंडल खेल 1982 में स्वर्ण पदक जीता। एशियाई खेल 1982 में कांस्य पदक हासिल किया।

पुलेला गोपीचंद :

देश के दूसरे आल इंग्लैण्ड चैंपियन (2001) बने। पांच बार राष्ट्रीय चैंपियन रहे। अब देश के नम्बर वन कोच हैं। उनकी तैयारी की हुई पीवी सिंधु ने रियो ओलंपिक में रजत पदक जीता।

अभिन्न श्याम गुप्ता :

अपने धैर्यपूर्वक खेल के लिए विख्यात रहा यह खिलाड़ी मिनी से लेकर सीनियर तक का राष्ट्रीय चैंपियन रहा। यह कारनामा करने वाले वह एकलौते भारतीय खिलाड़ी हैं। फ्रेंच ओपेन के चैंपियन रहे।

पी. कश्यप :

लाजवाब व आक्रामक खेल के लिए पहचाने जाने वाले पी. कश्यप ने बैडमिंटन में कई उपलब्धियां हासिल कीं। कई बार राष्ट्रीय चैंपियन रहे। ग्लासगो 2014 राष्ट्रमंडल खेल में उन्होंने स्वर्ण पदक जीता। लंदन ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे।

कदाम्बी श्रीकांत :

मौजूदा समय देश के सबसे उम्दा बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। रियो ओलंपिक में उन्होंने अपने शानदार प्रदर्शन से सबको आकर्षित किया।

अपर्णा पोपट :

नब्बे व अस्सी के दशक में इस खिलाड़ी ने भारतीय बैडमिंटन की तस्वीर बदली। राष्ट्रीय बैडमिंटन में एकछत्र राज किया। रिकार्ड नौ बार राष्ट्रीय चैंपियन बनी। राष्ट्रमंडल खेल में एक बार रजत और दो बार कांस्य पदक जीते। जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता।

बैडमिंटन के धुरंधर तब से अब तक





सायना नेहवाल :

अपर्णा पोपट के बाद भारतीय महिला बैडमिंटन की अगुवाई इस खिलाड़ी ने की। वह पहली भारतीय महिला खिलाड़ी हैं जिन्होंने वर्ल्ड नम्बर-1 होने का गौरव हासिल किया। लंदन ओलंपिक में कांस्य पदक, विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर इतिहास रहा। कई सुपर सीरीज के खिताब अपने नाम किए।



दमयंती ताम्बे :

साठ के दशक में इस खिलाड़ी का भी जलवा रहा है। उन्हें अपने आक्रामक खेल के लिए जाना जाता है। वह सिंगल व डबल्स की राष्ट्रीय चैंपियन रही। उन्होंने उबेर व थामस कप में देश की तरफ से हिस्सा लिया। उन्हें भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।



अमी घिया :

सत्तर के दशक में अमी घिया देश की सबसे उम्दा खिलाड़ियों में रही हैं। वह सात बार सिंगल की राष्ट्रीय चैंपियन रही। वह डबल्स में भी माहिर थीं। उन्होंने 12 बार डबल्स के राष्ट्रीय खिताब जीते। उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्हें भी अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



मधुमिता बिष्ट

अस्सी के दशक में इस खिलाड़ी की भारतीय बैडमिंटन में धाक थी। कोर्ट पर उनके मूवमेंट के भी दीवाने थे। उन्होंने सिंगल और डबल में अपना वर्चस्व स्थापित किया। उन्होंने आठ बार सिंगल के खिताब जीते। वही डबल्स में नौ बार राष्ट्रीय चैंपियन रही।

मीना शाह

साठ के दशक की सबसे बेहतरीन खिलाड़ी रही। 1959 से 65 तक लगातार सात बार राष्ट्रीय सिंगल चैंपियन रही। तीन बार डबल और दो बार मिक्स डबल की भी राष्ट्रीय चैंपियन रही। उन्होंने उबेर कप व थामस कप समेत कई अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में हिस्सा लिया। वह भारत व बैडमिंटन की पहली महिला अर्जुन पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें पद्मश्री से भी नवाजा गया।

पीवी सिंधु :

इस हेदराबादी खिलाड़ी ने पिछले दो वर्षों में खासी सुखियां बटोरी हैं। उन्होंने रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतकर भारतीय बैडमिंटन का नया इतिहास रचा। इसके पूर्व वह दो बार विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीत चुकी हैं। राष्ट्रमण्डल यूथ गेम्स व एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीते। ●

